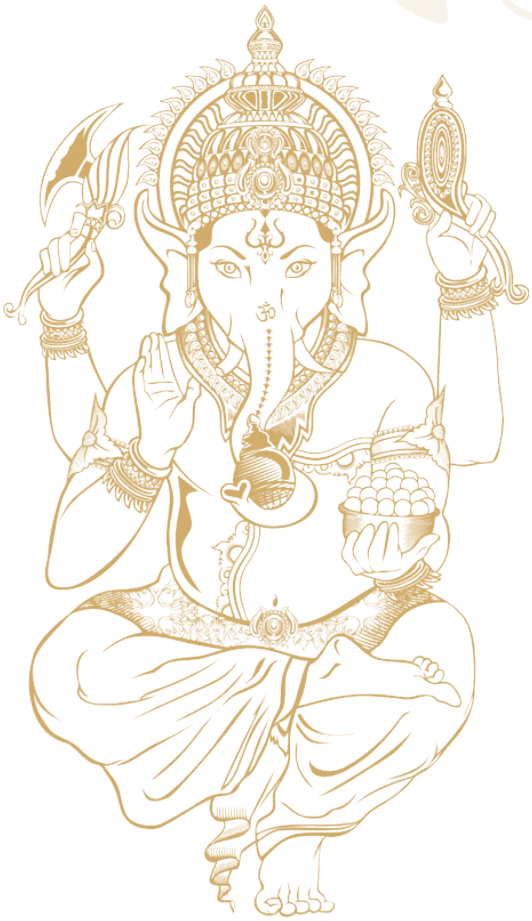

Ms Diksha Agrawal

07 Feb 1992

04:10 PM

Kathmandu

Model: Web-MyKundli

Order No: 120662101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**07/02/1992**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**16:10:00 घंटे**
इष्ट	23:25:17 घटी
स्थान	**Kathmandu**
देश	Nepal

अक्षांश	27:05:00 उत्तर
रेखांश	85:04:00 पूर्व
मध्य रेखांश	86:15:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:04:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:05:16 घंटे
वेलान्तर	-00:14:09 घंटे
साम्पातिक काल	01:12:29 घंटे
सूर्योदय	06:47:53 घंटे
सूर्यास्त	17:50:05 घंटे
दिनमान	11:02:12 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	24:08:49 मकर
लग्न के अंश	03:28:01 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उ०भाद्रपद - 1**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	सिद्ध
करण	वणिज
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दू-दूती
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	माघ	18
पंजाबी	संवत : 2048	माघ	25
बंगाली	सन् : 1398	माघ	24
तमिल	संवत : 2048	थई	24
केरल	कोल्लम : 1167	मकरम	24
नेपाली	संवत : 2048	माघ	25
चैत्रादि	संवत : 2048	माघ	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2048	माघ	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 07:19:32
जन्म तिथि _____: 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 14:18:15 घंटे
जन्म योग _____: उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग ____: शिव
योग समाप्ति काल _____: 12:58:31 घंटे
जन्म योग _____: सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण ____: गर
करण समाप्ति काल _____: 07:19:32 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 04:39:21
भभोग _____: 64:42:22
भोग्य दशा काल _____: शनि 17 वर्ष 7 मा 21 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

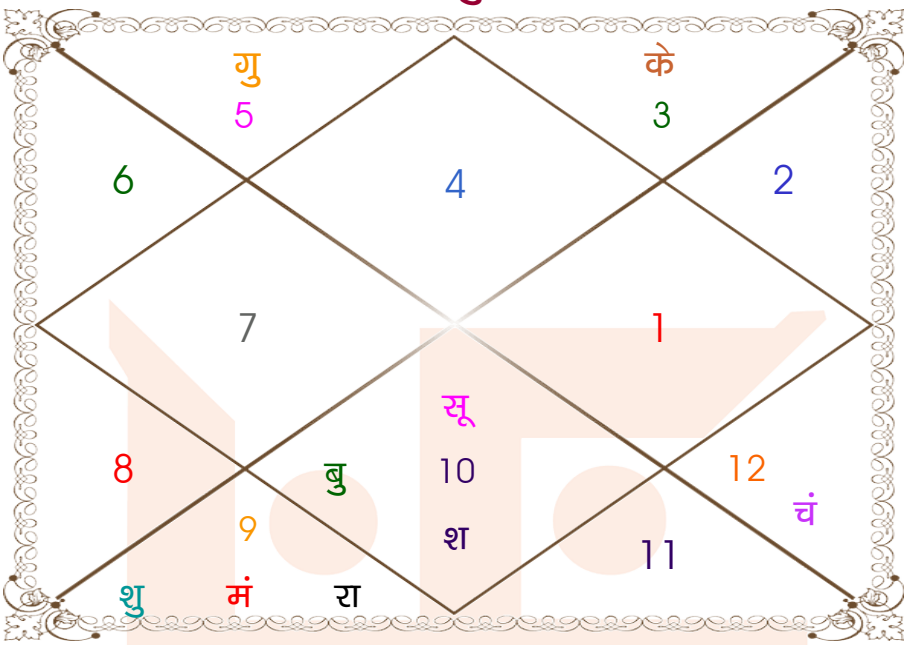

चन्द्र कुंडली

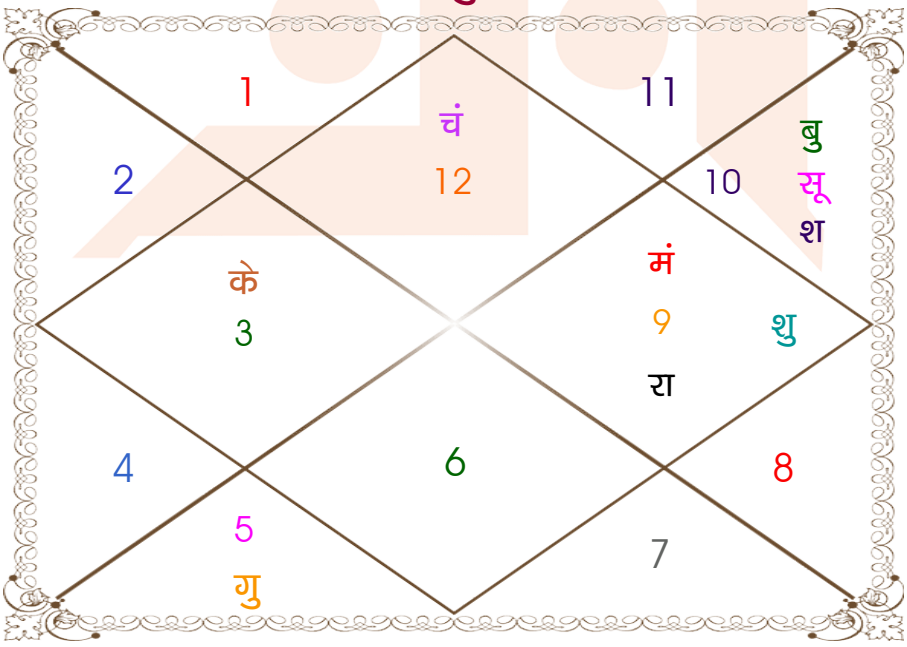

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

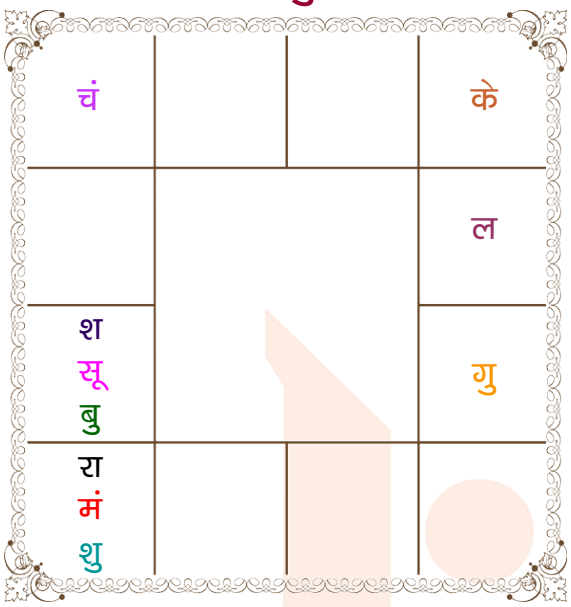

लग्न कुंडली

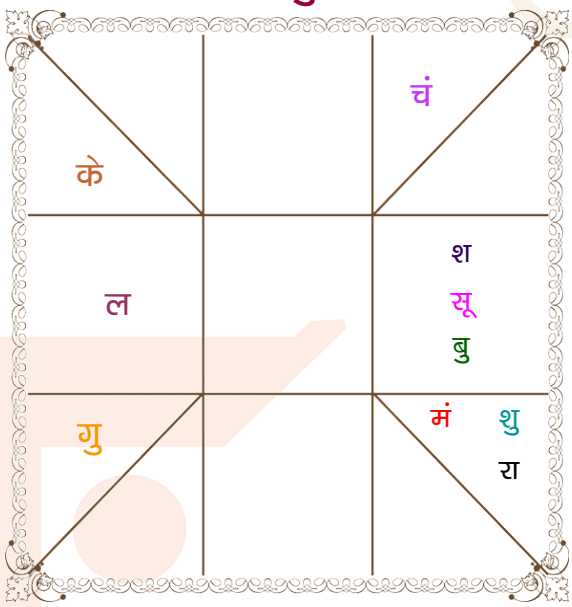

विंशोत्तरी
शनि 17वर्ष 7मा 21दि

शनि

07/02/1992

01/10/2110

शनि	29/09/2009
बुध	30/09/2026
केतु	29/09/2033
शुक्र	29/09/2053
सूर्य	30/09/2059
चन्द्र	29/09/2069
मंगल	29/09/2076
राहु	30/09/2094
गुरु	01/10/2110

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 7मा 21दि

भ्रामरी

30/09/2023

30/09/2027

भ्रामरी	10/03/2024
भद्रिका	29/09/2024
उल्का	30/05/2025
सिद्धा	11/03/2026
संकटा	29/01/2027
मंगला	11/03/2027
पिंगला	31/05/2027
धान्या	30/09/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	03:28:01	309:56:10	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	---
सूर्य			मक	24:08:49	01:00:49	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			मीन	04:17:08	12:16:44	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
मंगल			धनु	28:02:49	00:45:35	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
बुध		अ	मक	20:30:01	01:43:12	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		सिंह	18:36:12	00:06:35	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	मित्र राशि
शुक्र			धनु	22:22:42	01:13:50	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
शनि		अ	मक	16:30:13	00:07:09	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	स्वराशि
राहु	व		धनु	15:23:58	00:07:05	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	नीच राशि
केतु	व		मिथु	15:23:58	00:07:05	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	नीच राशि
हर्ष			धनु	22:05:15	00:03:10	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
नेप			धनु	23:50:29	00:02:02	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
प्लूटो			तुला	29:06:51	00:00:37	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	---
दशम भाव			मीन	25:52:56	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:06

लग्न-चलित

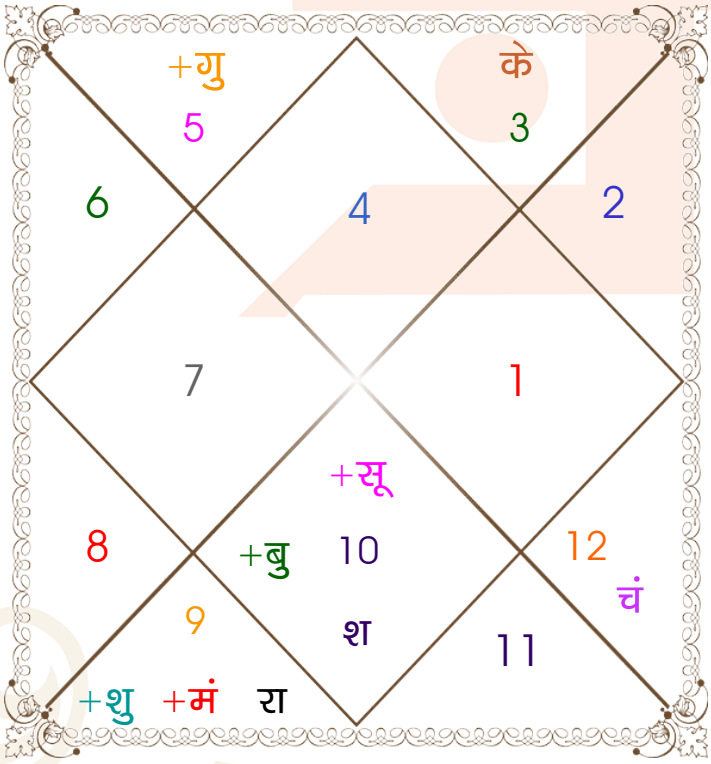

चन्द्र कुंडली

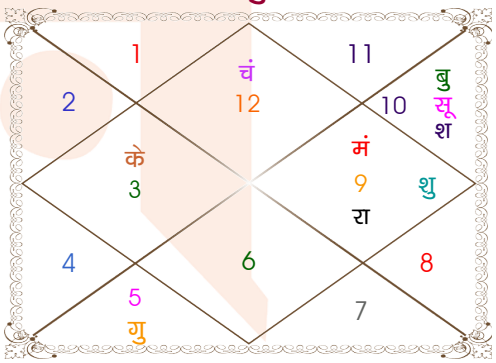

नवमांश कुंडली

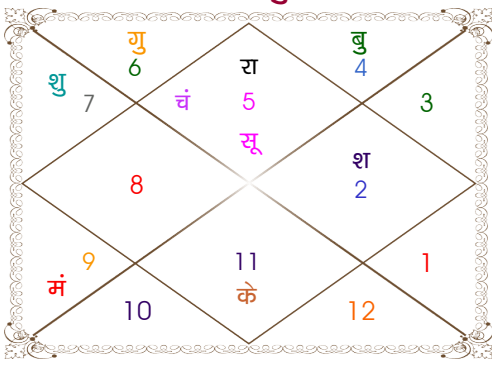

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	17:12:10	कर्क	03:28:01
2	कर्क	17:12:10	सिंह	00:56:19
3	सिंह	14:40:29	सिंह	28:24:38
4	कन्या	12:08:47	कन्या	25:52:56
5	तुला	12:08:47	तुला	28:24:38
6	वृश्चिक	14:40:29	धनु	00:56:19
7	धनु	17:12:10	मकर	03:28:01
8	मकर	17:12:10	कुम्भ	00:56:19
9	कुम्भ	14:40:29	कुम्भ	28:24:38
10	मीन	12:08:47	मीन	25:52:56
11	मेष	12:08:47	मेष	28:24:38
12	वृष	14:40:29	मिथुन	00:56:19

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	03:28:01
2	कर्क	27:03:55
3	सिंह	24:13:02
4	कन्या	25:52:56
5	वृश्चिक	00:04:50
6	धनु	03:10:26
7	मकर	03:28:01
8	मकर	27:03:55
9	कुम्भ	24:13:02
10	मीन	25:52:56
11	वृष	00:04:50
12	मिथुन	03:10:26

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

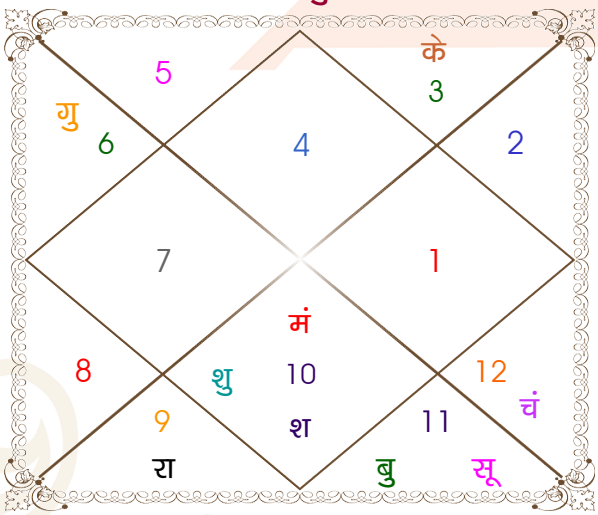

भाव कुंडली

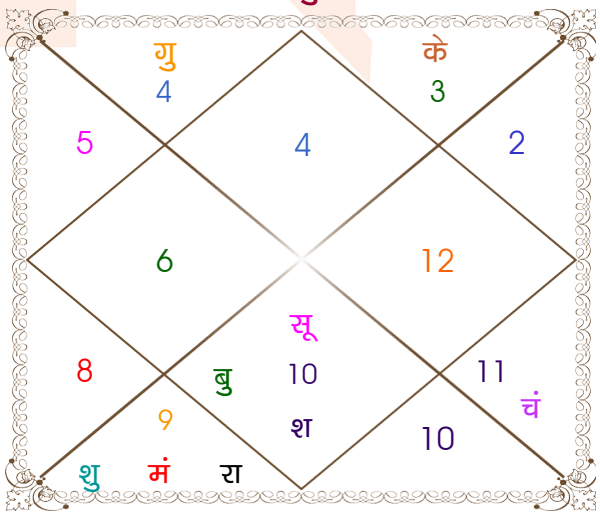

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 17 वर्ष 7 मास 21 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
07/02/1992		29/09/2009		30/09/2026		29/09/2033		29/09/2053	
29/09/2009		30/09/2026		29/09/2033		29/09/2053		30/09/2059	
शनि	02/10/1993	बुध	26/02/2012	केतु	26/02/2027	शुक्र	29/01/2037	सूर्य	17/01/2054
बुध	11/06/1996	केतु	22/02/2013	शुक्र	27/04/2028	सूर्य	29/01/2038	चंद्र	18/07/2054
केतु	21/07/1997	शुक्र	24/12/2015	सूर्य	02/09/2028	चंद्र	30/09/2039	मंगल	23/11/2054
शुक्र	20/09/2000	सूर्य	29/10/2016	चंद्र	03/04/2029	मंगल	29/11/2040	राहु	18/10/2055
सूर्य	02/09/2001	चंद्र	31/03/2018	मंगल	30/08/2029	राहु	30/11/2043	गुरु	05/08/2056
चंद्र	03/04/2003	मंगल	28/03/2019	राहु	17/09/2030	गुरु	31/07/2046	शनि	18/07/2057
मंगल	12/05/2004	राहु	15/10/2021	गुरु	24/08/2031	शनि	29/09/2049	बुध	25/05/2058
राहु	19/03/2007	गुरु	20/01/2024	शनि	02/10/2032	बुध	30/07/2052	केतु	30/09/2058
गुरु	29/09/2009	शनि	30/09/2026	बुध	29/09/2033	केतु	29/09/2053	शुक्र	30/09/2059

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
30/09/2059		29/09/2069		29/09/2076		30/09/2094		01/10/2110	
29/09/2069		29/09/2076		30/09/2094		01/10/2110		00/00/0000	
चंद्र	30/07/2060	मंगल	25/02/2070	राहु	12/06/2079	गुरु	17/11/2096	शनि	08/02/2112
मंगल	28/02/2061	राहु	16/03/2071	गुरु	05/11/2081	शनि	31/05/2099		00/00/0000
राहु	30/08/2062	गुरु	20/02/2072	शनि	11/09/2084	बुध	06/09/2101		00/00/0000
गुरु	30/12/2063	शनि	31/03/2073	बुध	31/03/2087	केतु	13/08/2102		00/00/0000
शनि	30/07/2065	बुध	28/03/2074	केतु	18/04/2088	शुक्र	13/04/2105		00/00/0000
बुध	30/12/2066	केतु	24/08/2074	शुक्र	18/04/2091	सूर्य	30/01/2106		00/00/0000
केतु	31/07/2067	शुक्र	24/10/2075	सूर्य	12/03/2092	चंद्र	01/06/2107		00/00/0000
शुक्र	31/03/2069	सूर्य	29/02/2076	चंद्र	11/09/2093	मंगल	07/05/2108		00/00/0000
सूर्य	29/09/2069	चंद्र	29/09/2076	मंगल	30/09/2094	राहु	01/10/2110		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 17 वर्ष 7 मा 18 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
20/01/2024		30/09/2026		26/02/2027		27/04/2028		02/09/2028	
30/09/2026		26/02/2027		27/04/2028		02/09/2028		03/04/2029	
शनि	24/06/2024	केतु	08/10/2026	शुक्र	08/05/2027	सूर्य	03/05/2028	चंद्र	19/09/2028
बुध	10/11/2024	शुक्र	02/11/2026	सूर्य	29/05/2027	चंद्र	14/05/2028	मंगल	02/10/2028
केतु	07/01/2025	सूर्य	10/11/2026	चंद्र	04/07/2027	मंगल	21/05/2028	राहु	03/11/2028
शुक्र	20/06/2025	चंद्र	22/11/2026	मंगल	28/07/2027	राहु	09/06/2028	गुरु	01/12/2028
सूर्य	08/08/2025	मंगल	01/12/2026	राहु	30/09/2027	गुरु	27/06/2028	शनि	04/01/2029
चंद्र	29/10/2025	राहु	23/12/2026	गुरु	26/11/2027	शनि	17/07/2028	बुध	03/02/2029
मंगल	25/12/2025	गुरु	12/01/2027	शनि	02/02/2028	बुध	04/08/2028	केतु	16/02/2029
राहु	21/05/2026	शनि	05/02/2027	बुध	02/04/2028	केतु	11/08/2028	शुक्र	23/03/2029
गुरु	30/09/2026	बुध	26/02/2027	केतु	27/04/2028	शुक्र	02/09/2028	सूर्य	03/04/2029

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
03/04/2029		30/08/2029		17/09/2030		24/08/2031		02/10/2032	
30/08/2029		17/09/2030		24/08/2031		02/10/2032		29/09/2033	
मंगल	11/04/2029	राहु	26/10/2029	गुरु	02/11/2030	शनि	27/10/2031	बुध	22/11/2032
राहु	04/05/2029	गुरु	17/12/2029	शनि	26/12/2030	बुध	24/12/2031	केतु	14/12/2032
गुरु	24/05/2029	शनि	15/02/2030	बुध	12/02/2031	केतु	16/01/2032	शुक्र	12/02/2033
शनि	16/06/2029	बुध	11/04/2030	केतु	04/03/2031	शुक्र	24/03/2032	सूर्य	02/03/2033
बुध	07/07/2029	केतु	03/05/2030	शुक्र	30/04/2031	सूर्य	13/04/2032	चंद्र	01/04/2033
केतु	16/07/2029	शुक्र	06/07/2030	सूर्य	17/05/2031	चंद्र	17/05/2032	मंगल	22/04/2033
शुक्र	10/08/2029	सूर्य	25/07/2030	चंद्र	14/06/2031	मंगल	09/06/2032	राहु	16/06/2033
सूर्य	17/08/2029	चंद्र	26/08/2030	मंगल	04/07/2031	राहु	09/08/2032	गुरु	03/08/2033
चंद्र	30/08/2029	मंगल	17/09/2030	राहु	24/08/2031	गुरु	02/10/2032	शनि	29/09/2033

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
29/09/2033		29/01/2037		29/01/2038		30/09/2039		29/11/2040	
29/01/2037		29/01/2038		30/09/2039		29/11/2040		30/11/2043	
शुक्र	20/04/2034	सूर्य	16/02/2037	चंद्र	21/03/2038	मंगल	25/10/2039	राहु	12/05/2041
सूर्य	20/06/2034	चंद्र	18/03/2037	मंगल	25/04/2038	राहु	28/12/2039	गुरु	05/10/2041
चंद्र	30/09/2034	मंगल	09/04/2037	राहु	26/07/2038	गुरु	22/02/2040	शनि	28/03/2042
मंगल	10/12/2034	राहु	03/06/2037	गुरु	15/10/2038	शनि	30/04/2040	बुध	30/08/2042
राहु	10/06/2035	गुरु	21/07/2037	शनि	19/01/2039	बुध	29/06/2040	केतु	02/11/2042
गुरु	20/11/2035	शनि	17/09/2037	बुध	15/04/2039	केतु	24/07/2040	शुक्र	04/05/2043
शनि	30/05/2036	बुध	08/11/2037	केतु	21/05/2039	शुक्र	03/10/2040	सूर्य	27/06/2043
बुध	19/11/2036	केतु	29/11/2037	शुक्र	30/08/2039	सूर्य	24/10/2040	चंद्र	27/09/2043
केतु	29/01/2037	शुक्र	29/01/2038	सूर्य	30/09/2039	चंद्र	29/11/2040	मंगल	30/11/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	3
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	97%	भाग्योदय, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	80%	धन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	78%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	56%	दम्पति, धन
हीरा	शुक्र	41%	शत्रु व रोग, हानि, ग्रह कलेश
गोमेद	राहु	25%	शत्रु व रोग, धन हानि
लहसुनिया	केतु	19%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट
पन्ना	बुध	3%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना

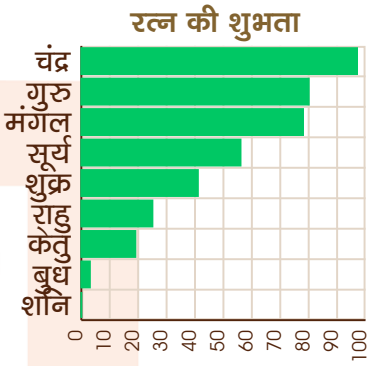

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	29/09/2009	38%	84%	66%	16%	80%	52%	21%	38%	0%
बुध	30/09/2026	62%	84%	78%	28%	80%	52%	0%	25%	19%
केतु	29/09/2033	38%	84%	84%	3%	80%	52%	0%	0%	44%
शुक्र	29/09/2053	38%	84%	78%	16%	80%	58%	9%	38%	31%
सूर्य	30/09/2059	69%	100%	84%	3%	86%	16%	0%	0%	0%
चंद्र	29/09/2069	62%	100%	78%	16%	80%	41%	0%	0%	0%
मंगल	29/09/2076	62%	100%	91%	0%	86%	41%	0%	0%	31%
राहु	30/09/2094	38%	84%	66%	3%	80%	52%	9%	50%	0%
गुरु	01/10/2110	62%	100%	84%	0%	92%	16%	0%	25%	19%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-28/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	कम खर्च
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। यह भाव शत्रु रोग तथा ऋण आदि का प्रतिनिधित्व करने वाला भाव है। अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा शत्रु या प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा एवं सामान्यतया आप स्वस्थता की ही अनुभूति करेंगी। आप पराक्रमी एवं कठोर कार्यों को सम्पन्न करने में रुचिशील रहेंगी। अतः आप (या कार्यरत न होने पर आपके पति) पुलिस सेना या अन्य पराक्रमी विभागों में कार्यरत हो सकती हैं। जीवन में ऋण आदि लेने की आपको कम ही आवश्यकता पड़ेगी तथा यदि लेंगी भी तो वापस करने में विशेष कठिनाई नहीं होगी जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगी। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यकलापों में आपकी अल्प मात्रा में ही रुचि रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कार्य करने पर अधिक विश्वास करेंगी। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्यबल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कर्म करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा तथा जीवन में शुभाशुभ दोनों प्रकार के व्ययों को करने में तत्पर रहेगी। यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इनको दूर करने में आप समर्थ रहेंगी साथ ही दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ होंगी। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने समस्त कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगी ।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगी तथा परिवार का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगी। जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। अतः प्रसन्नता पूर्वक आप अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनाव ग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रूप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय -समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(29/09/2009 - 30/09/2026)

बुध की महादशा 29/09/2009 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 30/09/2026 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपकी यात्रा, शक्ति में वृद्धि, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा सम्बन्धियों से सहायता मिली होगी। बुध की इस दशा में आपकी जीवन वृद्धि में उन्नति, साझेदार से लाभ और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति उत्तम रहेगी। फिर भी मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक समस्या, उदर रोग आदि हो सकता है। आपमें वायु, पित्त तथा कफ तीनों दोषों का मिश्रण है, अतः आपके लिए सामान्य उपचार आवश्यक है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जीवन साथी तथा साझेदार से भी लाभ मिल सकता है। सट्टे में पर्याप्त लाभ हो सकता है। विदेश से व्यापार लाभदायक हो सकता है। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तु का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ मिलेगा और आय तथा सम्मान में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल होगी तथा सफलता और पदोन्नति प्राप्त होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोग अच्छा करेंगे। समाज में आपकी छवि उत्तम होगी, व्यापार में विस्तार और आय में वृद्धि होग। कार्य के सिलसिले में आप यात्रा पर जा सकते हैं। जीवन में प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में उापको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी तथा वाहन का सुख भी मिलेगा। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी लाभदायक यात्रा तथा मंगल की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप प्रतियोगिताओं तथा परिचर्चा में अच्छा करेंगे और आपकी वाक्पटुता उत्तम होगी। आप समूह-परिचर्चा तथा ऐसी अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे। लेखा, वाणित्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता तथा समाचार माध्यम और जनसंचार में आपकी रुचि होगी। अन्य प्रतिभाशाली, कूटनीति और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका मस्तिष्क विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और

आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। आपके जीवन साथी को सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को जमीन-जायदाद सुख और मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता को सफलता और लाभ मिलेगा तथा मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहन को सट्टे में लाभ तथा सुख की प्राप्ति और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। इस दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी, सफलता मिलेगी और अध्यात्म की और झुकाव होगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह होगा, माता-पिता से लाभ मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपको कुछ लाभ और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र दशा में कुछ परिवर्तन और अचानक लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में बच्चों से सुख और सट्टे में लाभ मिलेगा। राहु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख, यश और ख्याति मिलेगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और लाभ हो सकता है।

महादशा :- केतु
(30/09/2026 - 29/09/2033)

केतु की महादशा 30/09/2026 को आरम्भ और 29/09/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु बारहवें भाव में स्थित है और इसकी दृष्टि छठे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको आराम, साझेदारों से लाभ, विवाह और यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको धन समृद्धि की प्राप्ति, उच्च शिक्षा तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शनि की राशि में स्थित केतु के कारण गठिया, मासपेशियों में दर्द और वायु से संबंधित रोग हो सकते हैं। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, बुखार, संक्रामक बीमारी, आँख में पीड़ा, चर्मरोग और निचले भागों में कष्ट हो सकता है। कुछ उपाय कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। आय से अधिक व्यय होगा। जहाँ तक संभव हो सट्टे से बचें। आप अपने प्रयास से धन संग्रह करेंगे। धन के आयोजन में सावधानी की जरूरत है। जीविका और व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर, गुप्त-विद्या, नर्सिंग, रेडियोग्राफी, न्यूरॉलॉजी आदि का चयन सकते हैं। डाक्टरी उपकरण, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लिफ्ट, द्रव-इंजीनियरी, टेलीफोन, दवा आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को बाहरी स्रोतों से लाभ होगा, साझेदारी तथा वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के कारोबार में कुछ परिवर्तन होगा और सहकर्मियों तथा अधीनस्थों से सहायता मिलेगी। आपका विदेशी स्रोतों से कारोबार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आराम मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि किन्तु, सम्पत्ति के लेन-देन में सावधानी की जरूरत है। इस दशा में विदेश यात्रा की सम्भावना है जो लाभदायक सिद्ध होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आप अपने अध्ययन का मार्ग या संस्था बदल सकते हैं। अपने स्तर को बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा विमान इन्जीनियरिंग, तत्त्व-मीमांसा या गुप्त विद्या, रेडियोग्राफी दवा से संबंधित विषय आदि में आपकी रुचि हो सकती है। बौद्धिक क्षमता के सभी विषयों पर आधिपत्य होगा।

परिवार :

परिवार के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्गदर्शन, की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है, शत्रुओं के कारण परेशानी और कार्यस्थान में परिस्थिति प्रतिकूल हो सकती है। आपकी माता को धन-समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि पिता की जमीन जायदाद में वृद्धि और प्रगति होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कार्यों में सफलता मिलेगी और जीवन में प्रगति होगी जबकि बड़ों को लाभ और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, परिवर्तन और आध्यात्मिक कार्य में रुचि होगी। शुक्र के कारण छोटी यात्रा, कुछ बाधा, अचानक लाभ और हानि तथा स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य के कारण विरोधियों पर विजय और कुछ बाधा हो सकती है। चन्द्र के कारण बच्चों से सुख मिलेगा, परिवार में शिशु का जन्म होगा और धन तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्याति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा, लाभ और व्यय होगा। बुध की अन्तर्दशा में आराम मिलेगा, विवाह और यात्रा होगी तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी।

अंर्तदशा :- केतु - केतु
(30/09/2026 - 26/02/2027)

आपके लिए केतु महादशा 30/09/2026 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 30/09/2026 को प्रारंभ होकर 26/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे मगर वे शुभकार्यों पर होंगे। कभी-कभी मन चिंचित रह सकता है, मगर जल्द ही प्रसन्नचित्त हो जाएंगे। संकल्पशक्ति उत्तम होगी; लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। कार्यालय का वातावरण हर्षमय रहेगा ; सहकर्मी और मातहत सहयोग करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; इच्छाशक्ति प्रबल होगी।

आपके जीवनसाथी को स्पर्धियों और विरोधियों पर सफलता प्राप्त होगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। माता भाग्यशाली रहेंगी, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, लोकप्रियता, प्रसन्नता, प्रसिद्धि, धनार्जन और सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ अवांछित परिवर्तन आ सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक धनागम हो सकता है, पैतृक संपत्ति से लाभ संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी लाभकारी होंगे, कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी, कार्यालय में हर्षमय वातावरण रहेगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को हनुमानजी की उपासना करें और बेसन के लड्डुओं से भोग लगाएं।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(26/02/2027 - 27/04/2028)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। कार्यालय शांतिपूर्ण होगा। शत्रुओं पर विजय होगी। आप मितव्ययी होंगे और धन का संचय करेंगे। सुख-साधन उपलब्ध होंगे। धार्मिक और दयालु होंगे।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता की आय उत्तम होगी। माता को सफलता प्राप्त होगी, उन्हें रिश्तेदारों से खुशी मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए संपन्नता, व्यापार से लाभ और अचल संपत्ति की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी, आय अच्छी होगी।

अगर वे कार्यरत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(27/04/2028 - 02/09/2028)

आपके लिए केतु महादशा 30/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 27/04/2028 को प्रारंभ होकर 02/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में व्यापार में धनार्जन उत्तम हो सकता है। आपकी इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; समाज में सम्मान मिलेगा। जीवन में प्रगति होगी।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, उच्चपद मिल सकता है, सम्मानित होंगे। आपके पिता थोड़े प्रयास से ही सफलता प्राप्त कर लेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं, घर में सुख-साधन मौजूद रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य, सफलता और धनी होने का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो लघु यात्राएं हो सकती हैं, उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं, लेखन आदि से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय और सक्रियता बढ़ेगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(02/09/2028 - 03/04/2029)

आपके लिए केतु महादशा 30/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 02/09/2028 से प्रारंभ होकर 03/04/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप दान-धर्म के काम करेंगे। समाजसेवी संस्था की स्थापना कर सकते हैं। आपकी संतान सुखकारी होगी। दूरस्थ स्थान की लाभदायक यात्रा हो सकती है। घर

में मेहमान आ सकते हैं। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। छोटे भाई-बहनों से उत्तम संबंध रहेंगे। कला, संगीत और साहित्य में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। आपके पिता लोकप्रिय और समाज में सफल होंगे। माता के मार्ग में बाधाएं आ सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, उत्तम शिक्षा, बहुत से मित्र और धनी बनने का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और स्पर्धा में सफल रहेगे। अगर वे कार्यरत हैं तो घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों को कुशल मार्केटिंग से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि व्याधि से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(03/04/2029 - 30/08/2029)

आपके लिए केतु की महादशा 30/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 03/04/2029 को प्रारंभ होकर 30/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। आय और धन में वृद्धि होगी। कार्यक्षमता बढ़ेगी। आपके किरायेदार आपसे सहयोग करेंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है। अध्यात्म में रुचि ले सकते हैं। सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है। पिता के साथ मधुर संबंध होंगे; उनसे आपको लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे ; उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। माता उत्साही होंगी; कार्यक्षमता बढ़ेगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा, परिवर्तन, अप्रत्याशित लाभ और परीक्षा में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की आय अच्छी होगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफल रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, रोगनिरोधक क्षमता बढ़ेगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए

हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(30/08/2029 - 17/09/2030)

आपके लिए केतु महादशा 30/09/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 30/08/2029 को प्रारंभ होकर 17/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपको स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापार का विस्तार होगा, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। खेल-कूद में रुचि होगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। किराये से आमदनी में वृद्धि होगी, किरायेदार सहयोग करेंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं, विदेशियों से संपर्क बढ़ेंगे, नयी मित्रता से लाभ होगा, यात्राएं होंगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता प्रसिद्ध होंगे; उनकी तीर्थयात्राएं होंगी। माता लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ और यात्रा का संकेत है। आपकी संतान को परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनकी आय बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरव रूप में उपासना करें।